Dr Pushpa Chauhan
Professor, Deptt. of Eco
Vaishali Mahila College

आवश्यक है उतना ही मूल्य निर्धारण के लिए मांग एवं पूर्ति की शक्तियाँ। कैंची द्वारा काटने के कार्य में दोनों पत्तियां साथ साथ चलती हैं तो हम यह नहीं कह सकते कि कैंची की केवल ऊपरवाली या नीचेवाली ही पत्ती काटने का कार्य करती है। इसी प्रकार से वस्तु के मूल्य निर्धारण के लिए मांग (उपयोगिता) तथा पूर्ति (उत्पादन लागत) दोनों की ही समान रूप से आवश्यकता होती है। यह सम्भव है कि कुछ दशाओं में मांग तथा कुछ दशाओं में पूर्ति मूल्य निर्धारण में प्रभावी हो जैसे कीमत का निर्धारण मांग एवं पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों से ही होता है। इसी कारण से मार्शल ने इस व्याख्या को मूल्य का सामान्य सिद्धान्त (General Theory of Value) कहा जाता है।

इस सिद्धान्त को कीमत का मांग एवं पूर्ति का सिद्धान्त अथवा सन्तुलन कीमत निर्धारण कहते हैं।

सन्तुलन कीमत का अर्थ - क्रेता और विक्रेताओं के बीच विनिमय का कार्य एक निश्चित कीमत पर ही सम्पन्न होता है। क्रेता वस्तु की मांग तथा विक्रेता वस्तु की पूर्ति करते हैं जिस कीमत पर क्रेता वस्तु खरीदने को तैयार है और उसी कीमत पर विक्रेता बेचने को तैयार है वह उस वस्तु की साम्य कीमत होती है। यानि साम्य कीमत किसी वस्तु की वह कीमत है जिस पर उस वस्तु की मांग एवं पूर्ति बराबर होती है अर्थात

सन्तुलन कीमत = बाजार मांग = बाजार पूर्ति

उस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता में साम्य कीमत का निर्धारण वस्तु की मांग एवं वस्तु की पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों द्वारा होता है.

वस्तु की माँग - वस्तु की माँग उपभोक्ता या क्रेता द्वारा की जाती है क्योंकि वस्तु में उपभोक्ता के आवश्यकता को संतुष्ट करने की शक्ति होती है यानि वस्तु में उपयोगिता के कारण ही माँग की जाती है। जिस वस्तु से उपभोक्ता को जितनी अधिक उपयोगिता प्राप्त होगी उसके लिए वह उतना ही कीमत देने को तैयार होता है। लेकिन किसी भी हालत में वस्तु की सीमान्त उपयोगिता से अधिक मूल्य नहीं देता है। अतः क्रेता की ओर से किसी वस्तु की सीमान्त ही उसके मूल्य या अधिकतम सीमा होता है।

वस्तु की माँग माँग के नियम से नियन्त्रित होती है। वस्तु की ऊँची कीमत पर माँग कम तथा कम कीमत पर माँग अधिक होती है यानि कीमत एवं माँग में विपरीत सम्बन्ध है। इसे निम्न रेखाचित्र से स्पष्ट करते हैं।

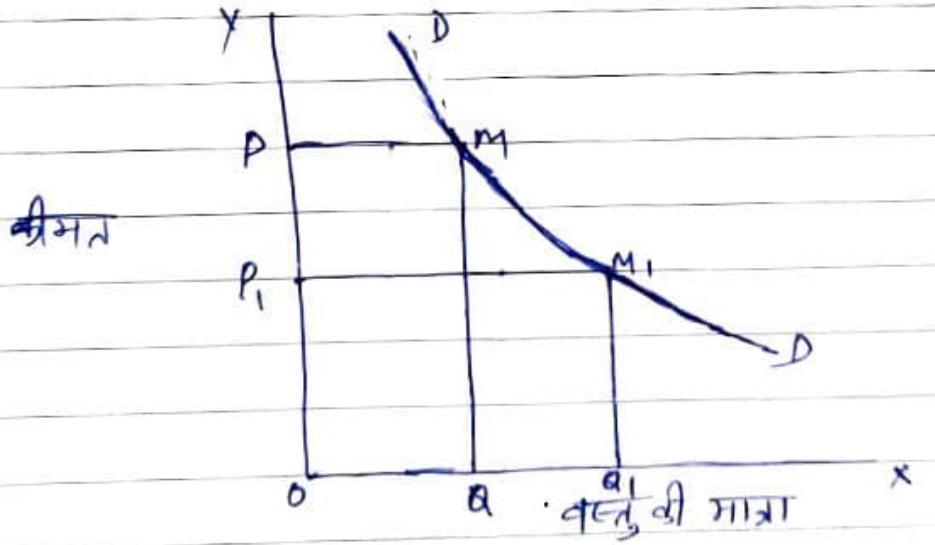

यहाँ OX अक्ष पर वस्तु की मात्रा तथा OY पर कीमत को दिखाते हैं जब वस्तु की कीमत OP है तो वस्तु की माँग OQ मात्रा है तथा वस्तु से मिलने वाली उपयोगिता QM है बराबर है यदि वस्तु का मूल्य घटकर OP' होता है तो वस्तु की माँग OQ से बढ़कर OQ1 हो जाता है तथा वस्तु से प्राप्त होने वाली उपयोगिता घटकर Q1M1 हो जाता है। यहाँ DD माँग वक्र है।

वस्तु की पूर्ति – वस्तु की पूर्ति उत्पादक या विक्रेता द्वारा किया जाता है। वस्तु के उत्पादन में लागत आती है इसलिए प्रत्येक उत्पादक या विक्रेता अपनी वस्तु का मूल्य लेना चाहता है उत्पादक उत्पादन लागत से अधिक मूल्य लेना चाहता है ताकि उसे कुछ लाभ हो। लेकिन किसी भी स्थिति में उत्पादन लागत से कम कीमत नहीं लेगा। पूर्ति पक्ष में उत्पादन व्यय वस्तु की न्यूनतम सीमा को निर्धारित करता है जो पूर्ति के नियम द्वारा नियमित होता है।

पूर्ति के नियम के अनुसार ऊँची कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा तथा कम कीमत पर वस्तु की कम मात्रा बेची जाती है। इस प्रकार कीमत एवं पूर्ति में धनात्मक सम्बन्ध है। जिसे निम्न रेखाचित्र से स्पष्ट करते है

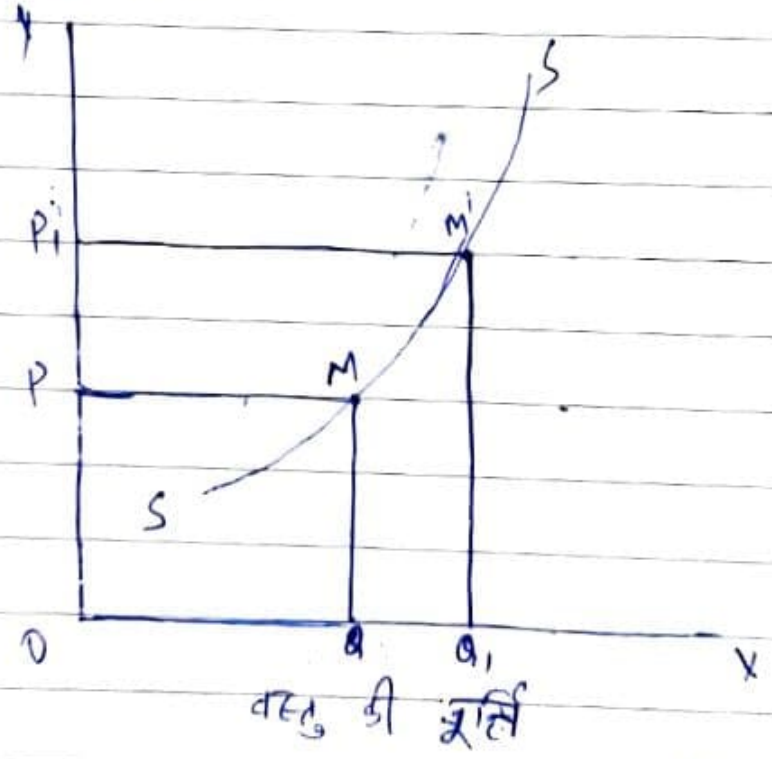

चित्र में OX पर वस्तु की पूर्ति तथा OY अक्ष पर कीमत को दिखाते है SS पूर्ति वक्र है जब वस्तु की कीमत OP रहता है तो पूर्ति OQ है तथा इस पूर्ति पर वस्तु की सीमान्त लागत QM है वस्तु की कीमत बढ़कर OP_1 हो जाती है तो पूर्ति बढ़कर OQ_1 तथा सीमान्त लागत M_1Q_1 हो जाता है।